आजादी का अमृत महोत्सव

आदिवासी स्त्री विमर्श: आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत एक संगोष्ठी

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची विश्वविद्यालय एवं विकास भारती विशुनपुर के संयुक्त तत्वाधान में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'आदिवासी स्त्री विमर्श' विषयक एक दिवशीय संगोष्ठी का आयोजन 12 अप्रैल 2022 को आर्यभट्ट सभागार, रांची में किया जा रहा है| जिसमें बतौर मुख्य अतिथि श्री अर्जुन मुंडा, माननीय मंत्री, जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमति अन्नपूर्णा देवी, माननीया शिक्षा राज्यमंत्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित रहेंगे| कार्यक्रम में डॉ. कामिनी कुमार, कुलपति, रांची विश्वविद्यालय, डॉ. आशा लकड़ा, महापौर, रांची महानगर निगम,पद्मश्री डॉ. अशोक भगत, सचिव, विकास भारती विशुनपुर, डॉ. रंजना कुमारी, सदस्या, झारखण्ड राज्य खाद्य आयोग, डॉ. संजय मिश्र, प्रधान संपादक, प्रभात खबर सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल होंगे|

कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में डॉ. दमयंती सिंकू, डॉ. स्टेफी टेरेसा मुर्मू, डॉ. मीनाक्षी मुंडा, सुश्री मधुश्री हतियाल, श्रीमति गीता बलमुची, श्रीमति सोनाली मुर्मू सोरेन, प्रो.अनिल कुल्लू, श्री महादेव टोप्पो, श्रीमति सुकमनी हेम्ब्रम एवं सुश्री रानी कुमारी बतौर वक्ता हिस्सा लेंगे।

कार्यक्रम में रांची के अलावा खूंटी, लातेहार, लोहरदगा, दुमका, गुमला (विशुनपुर), बुंडू-तमाड़, सिंहभूम-खरसाँवा जैसे क्षेत्रों से लगभग 500 आदिवासी महिलाएं शिरकत करेंगी|

संगोष्ठी संकल्पना

वही लेखन सार्थक है, जिसमें जीवन की अनुभूति युगबोध-से सम्पृक्त होकर अभिव्यक्ति पाती है। सम्प्रेषणीयता में ही उसकी सफलता निहित है। अस्मितामूलक विमर्श के विविध प्रसंगो में आदिवासी या जनजातीय विमर्श ने अपनी जमीन बना ली है। बदलते समय में संघर्ष और शोषण की परेशानियों को झेलती हुई जनजातियों ने पुराने सपनों की नई चमक के साथ विमर्श के नए आयाम में अपनी अस्मिता को उपस्थित किया है।

आदिवासी समाज के लोग अपने विषय में कम ही बोलते और लिखते है – उनके बारे में दूसरे लोग ही अधिक लिखते है। अन्य लोगों के लिए आदिवासी समाज के लोग कौतूहल और शोध के विषय बने हुए है। आम लोगों के मन में जनजातियों के प्रति तरह – तरह की धारणाएँ बनी रहती है। अज्ञानता दुराग्रह, पूर्वाग्रह और असहिष्णुतावश लेखन में उनके जीवन, उनकी प्रकृति और संस्कृति का चित्रण तोड़-मरोड़कर किया जाता है। उनकी अस्मिता पर प्रश्न-चिह्न लगाने की जगह सार्थक विमर्श, चिन्तन और सचेतनता की तलाश जोर-शोर से चल रही है। प्रस्तावित वेबिनार इस दिशा में संतोषप्रद पड़ताल करने में सफल होगा, ऐसी आशा की जाती है।

आदिवासी लोक में साहित्य-सृजन की परम्परा मुख्यतः मौखिक रही है। जंगलों में रहकर भी आदिवासी समाज ने इस परम्परा को अनवरत जारी रखा। ठेठ जन भाषा में प्रयुक्त होने के कारण एवं चमक-दमक प्रदर्शन तथा सत्ता- प्रतिष्ठानों से दूरी के कारण आदिवासी साहित्य भी आदिवासी समाज की तरह उपेक्षा का शिकार हुआ। पर आज यह हर्ष का विषय है कि अनेक देशज भाषाओ में आदिवासी साहित्य रचित हो रहा है। आदिवासी साहित्य लेखन को बहुरंगी छटा से यह विमर्श मूलक आयोजन रू-ब-रू करा पायेगा ऐसी अपेक्षा है।
उसमें कोई सन्देह नहीं कि आदिवासी समाज के लोगों ने ही संघर्ष और शोषण से जूझते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा है। गरीबी में संतोष, प्रदूषण-रहित सामाजिक व्यवस्था और जीवन-शैली, श्रम और संघर्ष से अनुराग एवं व्यापक भाईचारे के गुणों से सम्पन्न, आदिवासी जीवन

संस्कृति भाषा और व्यवहार के विभिन्न स्तरों पर आकृष्ट करती है, प्रभावित करती है। आधुनिकता के तमाम हमलों के बावजूद सांस्कृतिक समरसता और मौलिक परम्परा के कारण ही आदिवासी जीवन में शाश्वत मानवीय मूल्य सुरक्षित है। सांस्कृतिक पहचान की आवाज देश के हर कोने में मौजूद आदिवासी समाज के लोगों के बीच से उठ रही है। इस सांस्कृतिक अस्मिता को बदलते सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण में सहेजने और अविस्मरणीय बनाने में कलमकारों की भूमिका के दर्शन हम इस सारस्वत कार्यक्रम के माध्यम से कर पायेंगे।
निश्चित रूप से आदिवासी साहित्य रचनात्मकता का साहित्य है। यह परम्परा, कला, संस्कृति का समुच्चित रूप है, प्रकृति की सम्यक् उपस्थिति उनके साहित्य में रहती है। प्रकृति की अंतरगता के दर्शन यहाँ होते हैं, प्रकृति की महत्वपूर्ण, सुचिन्तित व सुचिक्कित भूमिका यहाँ परिलक्षित होती है, प्रकृति और प्रेम के रचाव-बचाव का साहित्य है आदिवासी साहित्य। जीवनवादी साहित्य है आदिवासी साहित्य। मूलभूत आधिकारो से वंचित रखने वाली ताकतों के खिलाफ उनके विरोध, विद्रोह और संघर्ष की जमीन तैयार करता है आदिवासी साहित्य।

आदिवासी साहित्य और आदिवासी लेखन उस दर्शन को प्रतिस्थापित करता है जो यह मानता है कि सम्पूर्ण प्रकृति सौन्दर्य की अनुपम मिसाल है। लेखन में सम्पूर्ण सृष्टि को बचाने की कोशिश है, लेखकों की चिन्ता एवं चिन्तन में सृष्टि, समष्टि एवं पूरी प्रकृति है।विशव

बहुआयामी आदिवासी साहित्य एक जीवन्त परम्परा है। वाचिकता इसका आधार है, नवीन अनुभवों को नऐ शब्दों में ढालकर अभिव्यक्त करने का अभिनव प्रयास इसे सदैव ताजा बनाये रखता है। जीवन का साहित्य आदिवासी साहित्य प्रकृति का सहयोगी है यह, सह-अस्तित्व का समर्थक है यह, ऊँच-नीच, भेद-भाव एवं छल-कपट से दूर है यह। यह न्याय का पक्षधर है, अन्याय का घोर विरोधी है।

जीवन के प्रति आनन्दमयी जिजीविषा का पोषण करता है आदिवासी साहित्य, सृष्टि के प्रति कृतज्ञता का भाव है यहाँ, हर प्रकार की असमानता के खिलाफ है यह।

आदिवासियों की जीवन-धारा का निर्धारण समाज में व्याप्त विश्वासों, भावनाओं और आदर्शो के द्वारा होता है। बनावट से दूर, हृदय की निश्छल सरल धारा में अवगाहन कर ये सरलता का रस पान करते है। उनकी भाषा व्याकरण के नियमों से मुक्त होती है जन बोली के माध्यम से उनकी चिन्ता, पीड़ा, वेदना तथा हर्ष-उल्लास की स्वाभाविक अभिव्यक्ति आदिवासी लेखन की सबसे बड़ी पूंजी है, जिनपर सम्यक् दृष्टिपात् करने का मौका देगा यह आयोजन।

इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विवेचन होगी-

- समाज में आदिवासी महिलाओं की स्थिति,
- विश्वदर्शन में आदि-दर्शन की भागीदारी,
- आदिवासी कला,
- आदिवासी महिलाओं की आधुनिक चुनौतियाँ,
- वन-रोजगार,
- स्वास्थ्य एवं वन-संरक्षण